युरोप का बिगड़ता मानसिक स्वास्थ्य

युरोप में अस्वस्थता का मुख्य कारण अब मानसिक समस्याएं है। जर्मनी के ड्रेसडेन टेक्निकल विश्वविद्यालय के हान्स-उलरिश विचेन के नेतृत्व में किए गए एक ताज़ा अध्ययन में पता चला है कि युरोप की लगभग 40 प्रतिशत आबादी यानी करीब साढ़े 16 करोड़ लोग हर वर्ष मानसिक विकारों के शिकार होते हैं। इनमें अवसाद यानी डिप्रेशन और दुश्चिंता यानी एंक्ज़ाइटी जैसे लक्षण शामिल हैं। अध्ययन के मुताबिक, इनमें से मात्र एक-तिहाई को ही कोई उपचार मिल पाता है।

मानसिक लक्षणों में सबसे ऊपर नंबर एंक्ज़ाइटी का है जो कुल मामलों में से 14 प्रतिशत के लिए ज़िम्मेदार है जबकि अनिद्रा व डिप्रेशन 7.0 प्रतिशत और 6.9 प्रतिशत मामलों में देखे गए।

युरोपियन न्यूरोसायकोफार्मेकोलॉजी में प्रकाशित इस अध्ययन की मुखिया विचेन का मत है कि 2005 में जब पहला युरोप-व्यापी मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण किया गया था, उस समय से आज तक स्थिति में सुधार बहुत कम हुआ है। आज भी निदान व उपचार की सुविधाएं बहुत कम हैं। यह अध्ययन युरोप के 30 देशों में पूरे 3 वर्ष तक चला था।

विचेन का मत है कि सरकारों को जल्दी निदान पर काफी ध्यान देने की ज़रूरत है। उनका कहना है कि मानसिक अस्वस्थता की कीमत भारी मगर अप्रत्यक्ष होती है। समाज को यह कीमत बेरोज़गारी, काम से अनुपस्थिति और अक्षमताओं के रूप में चुकानी होती है।

लंदन स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन के भारत में गोआ स्थित केंद्र के विक्रम पटेल का कहना है कि ऐसी स्थिति में यह चिंताजनक बात है कि उपचार की सुविधाओं की इतनी कमी है। विक्रम पटेल के मुताबिक "युरोप शायद भारत से यह नसीहत ले सकता है कि कतिपय मानसिक अस्वस्थताओं के संदर्भ में गैर-विशेषज्ञों की मदद कैसे ली जाए।" ***(स्रोत फीचर्स)***